موضوع الخطبة :الخصائص العشرة لبيت المقدس

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن تيمى (@Ghiras_4T)

शीर्षक:

बैतुलमक़दिस की दस विशषताएं

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

(يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله حق تقاته ولا تموتن الإ وانتم المسلمون)

(يا أيها الناس اتقوا ربكم الذي خلقكم من نفس واحدة وخلق منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونســـاء واتقوا الله الذي يتسائلون به والارحام إن الله كان عليكم رقيبا)

(يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله وقولوا قولا سديدا يصلح لكم اعمالكم ويغفر لكم ذنوبكم ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما)

प्रशंसाओं के पश्चात!
सर्वश्रेष्ठबातअल्लाह की बातहै
एवंसर्वोत्तममार्गमोह़म्मदसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमकामार्गहै ।दुष्टतमचीज़ धर्ममेंअविष्कारितबिदअ़त(नवाचार)हैऔरप्रत्येकबिदअ़तगुमराहीहैऔरप्रत्येकगुमराहीनरकमेंलेजा नेवालीहै ।

- ए मुसलमानो!मेंतुम्हेंऔरस्वयंकोअल्लाह के तक़वा(ईश्वरभक्ति) की वसीयतकरताहूं,यह वहवसीयतहैजोअल्लाह ने पूर्वऔरपश्चात के समस्तलोगोंको की है:

(وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ)

अर्थातःनिसंदेहहमने उन लोगोंकोजोतुम से पूर्वपुस्तकदिए गए थेऔरतुमकोभी यहीआदेशदियाहैकिअल्लाह से डरतेरहो।

अल्लाहकातक़वा(धर्मनिष्ठा)अपनाएंऔरउससेडरतेरहें,उसकीआज्ञाकारिताकरेंऔरउसकेअवज्ञा से बचतेरहें,जानलेंकिअल्लाहतआ़ला ने अपनीह़िकमत(निती) से कुछ समय कोकुछपरप्राथमिकतादीहै,जैसेकुछदेवदूतोंकोकुछदेवदूतोंपरप्राथमिकतादीहै,बाजपुस्तकोंकोबाज परवरीयताप्रदान
की,बाजपैगंबरोंकोबाजपरप्राथमिकतादी,बाजसमयोंऔरबाजस्थानकोबाजपरवरीयताप्रदान की है,यह अल्लाह की ह़िकमत(निती) औरउसकेसूक्ष्म चयनकापरिनामहै,

(وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ)

अर्थातःआपकारबजोचाहताहैपैदाकरताहैऔरजिसेचाहताहैचुनलेताहै,उनमें से किसीकोकोईअधिकारनहीं।

बैतुलमक़दिसकाअर्थहैःवह घरजोबहुदेववाद के प्रत्येकअभिव्यक्तियों से पवित्र है।

- ए अल्लाह के बंदो!बैतुलमक़दिस की दसविशेषताएंहैंः

1.**प्रथम विशेषताः**अल्लाहतआ़ला ने कुरानमजीदमेंइसेबरकतवाला घोषितकियाहै,अल्लाहकाकथनहैः

(سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا حَوْلَهُ)

अर्थातःपवित्र हैवहअल्लाहतआ़लाजोअपने बंदे कोरातहीरातमेंमस्जिदेह़राम से मस्जिदेअक़सातकलेगयाजिसकेआस.पासहमनेबरकत दे रखीहै।

कुदसवहस्थानहैजोमस्जिद के अंदरहै।

2.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह हैकिअल्लाहतआ़ला ने मूसाअलैहिस्सलाम की जुबान से इसे**मुक़द्दस**(पवित्र)बतलायाहैः

(يَا قَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ)

अर्थातःए मेरीक़ौम(समुदाय

वाला)!इस**मुक़द्दस**(पवित्र)भूमिमेंप्रवेशकरजाओजोअल्लाहतआ़ाला ने तुम्हारेनामलिख दियाहै।

मुक़द्दसकाअर्थहैःपवित्र।

3.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह हैकिअल्लाहतआ़ाला ने अपनेपैगंबरमूसाकोआदेशदियाकिवहां के वासियों से युद्ध करें,जोकिलंबे शरीरवाले,कठोरस्वभाव,जालिमऔरबुत के पूजारीथे,और यह आदेशदियाकिबैतुलमक़दिसको उनके व्यवसा से मुक्तकराएं,इसमें एकेश्वरवादकाप्रचार.प्रसारकरेंऔरबहुदेववादकोवहां से दूरकरें,मूसा ने अपनीक़ौम(समुदाय)से कहाः

(يَا قَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ)

अर्थातःए मेरीक़ौम(समुदाय वालो!

)इस**मुक़द्दस**(पवित्र)भूमिमेंप्रवेशकरजाओजोअल्लाहतआ़ाला ने तुम्हारेनामलिख दियाहैऔरअपनेपीठ की ओर न फिरोकिफिरहानीमेंपड़जाओ।

4.बैतलमक़दिस की एक विशेषता यह हैकिनबीसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने हमेंसूचनादीकिमूसाअलैहिस्सलाम ने अल्लाहतआ़ाला से प्रार्थना की किजबउनकीमृत्युका समय आए तोउनकोबैतुलमक़दिस से एक पत्थर की मार की दूरी के बराबरनिकटकरदेताकिउनकीमृत्युउसीमेंहो,उसकाकारणकेवल यह थाकिआपबैतुलमक़दिस से प्रेमकरतेथे,अर्थातआपसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने फरमायाःयदिमेंवहांहोतातोतुम्हेंउनकीक़ब्रदिखाताजोकिलालटीले के पासरासते के निकटहै।[1]

5.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह हैकिजब यूषाबिन(पुत्र) नून ने बैतुलमक़दिस के अत्याचारीक़ौम(समुदाय)से युद्ध करनेकासोचातोअल्लाहतआ़ाला ने उनके लिए सूर्यकोरोकदिया(अर्थातउसकीगतिविधि कोरोकदिया),क्योंकिरातनिकटहोचुकीथी,आपकेसाथआपकीसेनाथी,तोआपनेअल्लाहतआ़ाला से

1(इसे बोखारीः1339 और मुस्लिमः2373 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

प्रार्थना की किसूर्यको(अस्तहोने से)रोक दे ताकिअंधकारआने से पहलेहीगांवमेंप्रवेशहोकरअत्याचारी एवंतानाशाहक़ौम(समुदाय)से युद्ध करसकें,तोअल्लाह ने उनकीप्रार्थनास्वीकार की औरबैतुलमक़दिसविजय होगया,अबूहोरैरारजीअल्लाहुअंहु से वर्णितहैकिआपसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने फरमायाःनिसंदेहसूर्यकिसीमनूष्य के लिए कभीनहींरोकागया,केवल यूषाबिननून के,यह उन दिनों की बातहैजबवेबैतुलमक़दिस की ओरजारहेथे ।[2]

6.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह हैकिउसकाविजय क़यामत की पहचानहै,औफबिनमालिक से वर्णितहै,आपनेफरमायाकिमेंग़ज़वातबूक के समय आपसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम की सेवामेंउपस्थितहुआ,आप उस समय चमड़े के एक खीमेंमेंथे ।आपसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने फरमायाः"क़यामत की छे चिन्हगिनलो,मेरीमृत्यु,फिरबैतुलमक़दिसकाविजय... "[3]

7.बैतलमक़दिस की एक विशेषता यह भीहैकिकानादज्जालइसमेंप्रवेशनहींहोगा,बल्किइसकेनिकटहीउसकीहत्याकरदीजाएगी,मसीह़ बिनमरयमअलैहिस्सलामजबउसकोबाबेलुद के निकट देखेंगेतोउसकीहत्याकरदेंगे ।[4]

8.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह हैकिकाफिरों के सरदारोंऔर उनके वरिष्ठअगुआओं की हत्याफलसतीन के अंदरहीहोगा,औरदज्जालकोईसाअलैहिस्सलाम के हाथोंफलसतीनमें एक युद्ध के दौरानहत्याकियाजाएगाजोवास्तवमेंनिर्णायक एवंजातिहत्याहोगी,उसमेंदज्जाल यहूदियोंकानेताहोगा,इसप्रकारईसाअपनीसेना के साथदज्जालऔरउसकीसेना की हत्याकरदेंगे,बल्कि उन समस्तईसाइयों की हत्याकरदेंगेजो उन परवास्तवमेंईमाननहींलाऐंगे,अर्थातइसबातपरईमाननहींलाएंगेकिवह एक मनुष्य हैंजिनको(संदेशवाहकबनाकर)भेजागयाहै,वहईसाइयों के सूअरों की भीहत्याकरेंगेऔरउनकी उस सलीबकोतोड़ डालेंगेजिस की वेपूजाकरतेहैं,यह सारी घटनाएंफलसतीनमें घटींगी ।[5]

2(इसे अह़मद 8315 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और"अलमुसनद"के शोधकर्ताओं ने इसे सही कहा है।)

3(बोखारी 3176)

4(लुद,बैतुलमक़दिस के निकट एक स्थान है।)

5(देखेंःसही मुस्लिम में हज़रत अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित मसीह के नाज़िल होने और उनका दज्जाल की हत्या का घटना:2897,इसी प्रकार हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रजीअल्लाहु अंहु की हदीस भी देखें:156,तथा हदीस संख्या2937 के अंतर्गत न्वास बिन समआन किलाबी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित हदीस भी देखें।)

9.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह हैकिअंतकालमेंईसामसीह़ बिनमरयम के नेतृत्वमेंजबमुसलमानोंऔर यहूदियों के मध्य युद्ध होगीतो वृक्ष औरपत्थर यहूदियोंकाहननकरेंगे,अबूहोरैरारजीअल्लाहुअंहु से वर्णितहैकिसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लमने फरमायाः"क़यामतनहींआएगी यहांतककिमुसलमान यहूदियों के विरुद्ध युद्ध लड़ेंगेऔरमुसलमानउनकीहत्याकरेंगे यहांतकके यहूदी वृक्ष अथवापत्थर के पीछेछिपेगाऔरपत्थरअथवा वृक्ष कहेगाःए मुसलमान!ए अल्लाह के बंदे!मेरेपीछे एक यहूदीहै,आगे बढ़ औरइसकीहत्याकरदे,सेवाए ग़दक़द वृक्ष के(वहनहींकहेगा)क्योंकिवह यहूदीका वृक्ष है" ।[6]

10.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि इसके अंदर **मस्जिदे अक़्सा** स्थितहै,जोकि उन तीन मस्जिदोंमें से एक है जिनकी महानता क़ुरान एवं ह़दीस से प्रमाणित है,इसकी महानता **के अनेक कारण हैं**:

प्रथमकारणःसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लमकोमस्जिदेह़राम से रात के समय मस्जिदेअक़्सातक ल जायागया,फिरआपकोआकाश(अर्थातमेराज की यात्रा)परलेजायागया,अल्लाहतआ़लाकाकथनहैः

(سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى **الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى**)

अर्थातःपवित्र हैवहअल्लाहतआ़लाजोअपने बंदे कोरातहीरातमेंमस्जिदेह़राम से मस्जिदेअक़्सातकलेगया।

द्वितीय कारणःसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने इसरा की यात्रा के समय मस्जिदेअक़्सा के अंदरसमस्तनबयों की इमामतफरमाई,आपसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने फरमायाः"फिरनमाज़ का समय होगयातोमेंनेउनकीइमामतकी" ।[7]

तृतीय कारणःमस्जिदेअक़्सा की एक विशेषता यह हैकिअल्लाह ने अपनेनबीसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम के सामनेउसेस्पष्टकरदिया यहांतककिआप(मक्का से ही)उसे देखनेलगे,यह उस समय हुआजबआपनेबहुदेववादियों के सामनेमस्जिदेअक़्सा की यात्रा काउल्लेख कियातोउन्हों ने आपकोझुटलादियाऔरआपकोझुटलाने के लिए

6(इसे बोखारी 2936 और मुस्लिम 2922 ने वर्णित कया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं।)

7(इसे मुस्लिम172 ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित कया है।)

आपसेउसकीविशेषताएंपूछनेलगे,क्योंकिउनकोमालूमथाकिआपनेकभीमस्जिदेअक़्सा की यात्रा नहीं की है,तो(उस समय)अल्लाह ने मस्जिदेअक़्साकोआपकेलिए उूंचाकरदियाऔरआप उन बहुदेववादियों के समक्ष उसकीइमारतऔर एक एक चिन्हबतलानेलगे,ह़ज़रतजाबिररजीअल्लाहुअंहुमा से वर्णितहैकिसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने फरमायाः"जबक़ोरैश ने मुझकोमेराज की घटनाकोलेकेझुटलायातोमें(काबा के)ह़जरस्थानमें खड़ाहोआऔरअल्लाह ने पूराबैतुलमक़्दिसमेरेसामनेकरदिया।मेंउसे देख करउसकी एक एक पहचानबतलानेलगा" ।[8]

चौथाकारण:मस्जिदेअक़्सा की एक विशेषता यह हैकिवहमुसलमानोंकाप्रथमक़िबलाहै,बराबिनआ़ज़िबरज़ीअल्लाहुअंहुफरमातेहैंःहमनेसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम के साथसोलहमहीनेअथवासतरहमहीनेतकबैतुलमक़्दिस की ओरनमाज़ पढ़ी फिरहमकोकाबे की ओरफैरदियागया।[9]

पांचवाकारणःमस्जिदेअक़्सा की एक विशेषता यह भीहैकिवह उन मस्जिदोंमें से हैजिनकीओरप्रार्थना की नियत से यात्रा करनाजाइजहै,इसकाप्रमाणसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम की यह ह़दीसहैः"कजावेकेवलतीनहीमस्जिदों के लिए कसेजाएंःमस्जिदेह़राम,मस्जिदेअक़्साऔरमेरीइसमस्जिदे(अर्थातमस्जिदेनबवी)के लिए " ।[10]ज्ञातहुआकिप्रार्थनाकरने की नियत से इनतीनमस्जिदों के एलावासंसार के किसीस्थान की यात्रा करनाजाइजनहींहै।

छटाकारण:मस्जिदेअक़्सा की एक विशेषता यह हैकिउसमेंपढ़ी जानेवालीनमाज़(अन्य मस्जिदोंमेंपढ़ी जानेवाली)250नमाज़ों से श्रेष्ठतरहै,अबूज़ररजीअल्लाहुअंहु से वर्णितहै,वहफरमातेहैंःहमसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम के पासबैठेहुए थेकिउसी मध्य यह जिक्रछिड़ गयाकिकोंसीमस्जिदअधिकश्रेष्ठतरहै,मस्जिदेनबवीअथावाबैतुलमक़्दिस, सल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने फरमायाःमेरीइसमस्जिद(मस्जिदेनबवी)की एक नमाज़ मस्जिदेअक़्सा की चारनमाज़ों से श्रेष्ठतरहै,वहबड़ीसूक्ष्म मस्जिदहै,निकटहैकि(ऐसा

8(बोखारी 3886,मुस्लिम 170)

9(बोखारी 4492,मुस्लिम 525)

10(इसे बोखारी 1995 और मुस्लिम 827 ने अबूसईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित कया है,तथा बोखारी 1189 ने इसे अबूहोरैरा रजीअल्लाहु से वर्णित कया है।)

युगआएगाजब)मनुष्य के पास घोड़े की लगाम के बराबरभी यदिपृथ्वीहोगीजहां से वहमस्जिदेअक़साको देख सकेगा,तोवहउसकेलिए पूरेसंसार से बेहतर,अथवाफरमायाःसंसारऔरउसकीसमस्तनेमतों से बेहतरहोगी।[11]

अल्लाह के बंदो!चूंकिमस्जिदेनबवीमेंपढ़ी जानेवालीनमाज़ हजारनमाज़ों से बेहतरहै,इसलिए मस्जिदेअक़सामेंपढ़ी जानेवालीनमाज़ 250 नमाज़ों से बेहतरहै,क्योंकिवहमस्जिदेनबवी की नमाज़ की एक चौथाई के बराबरहै।[12]

सातवांकारण:मस्जिदेअक़सा की एक विशेषता यह हैकिवहपृथ्वीपरनिर्माणहोनेवालीदूसरीमस्जिदहै,अबूज़ररज़ीअल्लाहुअंहुफरमातेहैंकिमेंनेपूछाः"या रसूल्लाह!पृथ्वीपरसर्वप्रथमकोंसीमस्जिदनिर्माण की गईहै?आपसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने फरमायाःमस्जिदेहराम।उन्होंनेपूछाःऔरउसकेपश्चात?फरमायाकिमस्जिदेअक़सा(बैतुलमक़दिस)।मेंनेपूछाःइनदोनों के निर्माणमेंकितने समय काअंतररहाहै?आपसल्लाल्लाहुअलैहिवसल्लम ने फरमायाःचालीसवर्षका....."[13]

आठवांकारण:मस्जिदेअक़सा की एक विशेषता यह हैकिसोलेमानबिनदाउदअलैहिमस्सलाम ने इसकीपुनःनिर्माण की,अल्लाह से प्रार्थना की किजोव्यक्तिभीइसमेंनमाज़ पढ़े,उसकेपापमिटादे,तोअल्लाहतआ़ाला ने उनकीप्रार्थनाकोस्वीकारकिया,अब्दुल्लाहबिनअम्ररज़ीअल्लाहुअंहु से वर्णितहैकिः"सोलेमानबिनदाउदअलैहिमस्सलाम ने जबबैतुलमक़दिसकानिर्माणकियातोअल्लाहतआ़ाला से तीनचीजेंमांगी,अल्लाह से मांगाकिवहलोगों के मामलों के ऐसेनिर्णय करेंजोअल्लाह के निर्णय से मेल खातेहों,तोउन्हें यह चीजदीगई,तथाउन्होंनेअल्लाहतआ़ाला से ऐसासाशनमांगाजो उनके पश्चातकिसीको न मिले,तोउन्हें यह भीप्रदानकियागया,औरजिस समय वहमस्जिदेअक़साकानिर्माण से फारिगहुए तोउन्होंनेअल्लाहतआ़ाला से प्रार्थना की किजोकोईइसमस्जिदमेंकेवलनमाज़ के

11(इसे तबरानी ने"अलऔसत"6983 में हाकिम ने "अलमुसतदरक"4509 में वर्णन किया है और उपरोक्त शब्द हाकिम के हैं,अल्बानी ने "तमामुलमिन्ना"पृष्ठ संख्याः294 में इसे सहीह़ कहा है।)

12(रही वह ह़दीस जो प्रसिद्ध है कि मस्जिदे अक़सा की नमाज़ 500 नमाज़ों से श्रेष्ठतर है,तो यह ह़दीस ज़ईफ है,देखें:"तमामुलमिन्ना"शैख अल्बानी रहीमहुल्लाह की पृष्ठ संख्या292)

13(इसे बोखारी 3425 और मुस्लिम 520 ने वर्णित किया है और उपराक्त शब्द मुस्लिम के हैं)

लिए आए तोउसेउसकेपाप से ऐसेपवित्र करदेजैसेकिवह उस दिनथाजिसदिनउसकीमाता ने उसेजना" ।[14]

नोवांकारण:सोलेमान से पूर्वभीअनेकपैगंबरों ने मस्जिदेअक़साकापुनःनिर्माणकिया,जैसेइब्राहीमऔर याकूबअलैहिमस्सलाम।

दसवां कारण:मस्जिदे अक़सा की एक विशेषता यह भी है कि जिस व्यक्ति ने उसे विजय किया वह खलीफा उ़मर बिन अलखत्ताब रजीअल्लाहु अंहु हैं,आपके शासनकाल में इस्लामी सेना ने अबूओबैदा बिन जर्राह़ रज़ीअल्लाहु अंहु की नेतृत्व में 636 इस्वी में कुदस का घेराव कर लिया,घेराव के छे महीने पश्चात ईसाइयों के सरदार ने इस शर्त पर हथियार डाल दिया कि उ़मर बिन अलखत्ताब रजी़अल्लाहु अंहु स्वयं यहां तशरीफ लाएं।

सन 16 हिजरी में खलीफा उ़मर ने कुदस की यात्रा की ताकि नगर की चाभी प्राप्त करें और उस शहर के इस्लामी देशों में शामिल होने की घोषणा करें,और ऐसा ही हुआ,आप उसी दरवाजे से मस्जिदे अक़सा में प्रवेश किए जिस दरवाजे से रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेराज की रात प्रवेश किए थे,मेह़राबे दाउूद में तह़ियतुल मस्जिद पढ़ी,दूसरे दिन फज़र की नमाज़ में मुसलमानों की इमामत की,प्रथम रकअ़त में सूरह(ص)का सस्वरपाठ किया,द्वितीय रकअ़त में(सूरह बनी इसराईल)का सस्वरपाठ किया,उसी अवसर पर उ़मरिया अनुबंध लिखा गया,जिसमें शाम के ईसाइयों से संबंधित उ़मर रजीअल्लाहु अंहु की शर्तें लिखी गईं,उसमें उन अधिकारों का भी उल्लेख किया गया जो मुसलमानों की ओर से उन ईसाइयों को दिए जाएंगे जो इस्लामी शासन के अंतर्गत फलसतीन के अंदर निवास करेंगे,उनमें सर्वप्रथम अधिकार यह था कि मुसलमानों के देश में शांति एवं सम्मान के साथ जीवन बसर करने के बदले वे मुसलमानों को जिज़या(कर)देंगे।[15]देखें:अलबिदाया व अलनिहाया:वाक़िआत सन 15 हिजरी

अल्लाह के बंदो!यह वेदसविशेषताएंहैंजिनसेअल्लाह ने बैतुलमक़दिसकोसम्मानितकियाहै,इसकेसम्मान एवंप्रतिष्ठा के लिए प्रत्येकमुस्लिमकोचाहिए किइन्हैंजानेंऔरअपनेसंतानकोउनकीशिक्षा दे,क्योंकिफलसतीनकाविषय कोईसामग्रीविषय

14(इसे अहमद172/2 ने और नेसाई 693 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द नेसाई के हैं,अथवा अल्बानी रहीमहुल्लाह ने इसे सही कहा है।)

15 देखें:अलबिदाया व अलनिहाया:वाक़िआत सन 15 हिजरी

नहींहै,बल्कि ऐसाविषय हैजिसकासंबंध आस्था से है,इसविषय मेंकोताही एवंलापरवाहीबरतने से हमारे धर्मनिष्ठाकोठेंसपहुंचतीहै,इस धरतीश्रेष्ठतर एवंउच्चतरराजाओंने फलसतीन से(यहूदियों के अवैध)व्यवसाय को ख्तम करने के लिए अंथकप्रयासकीं,क्तिूइसविषय में खयानतकरनेवालों ने खयानत की औरस्पष्टरूप से इसउम्मत के मजूसियोंऔरईरानीराफजियों के साथसांठगांठकरलिया,जोकुदस की स्वतंत्रता के बैनरउठाकरमस्जिदेअक़सातकपहुंचनाचाहतेहैंताकिउसपरबहुदेववादका ध्वजलहरासकें,वहांअपनेदेशकाकबज़ा जमासके,काबा के रब की क़सम!यह अपमानित एवंपरास्तहैं,क्योंकिफलसतीनकोउमरऔर उनके पश्चात**सलाहुद्दीन**ने विजय कियाथाऔरइसकोलाभपहुंचानेकाकार्य ऐसाव्यक्तिनहींकरसकताजोउमरऔर**सलाहुद्दीन**कोबुराभलाकहताहो!

अल्लाहतआ़लामुझे औरआपकोकुरानमजीद की बरकतों से मालामालकरें,मुझे औरआपकोउसकीआयतोंऔरनीतियोंपरआधारितप्रामर्शों से लाभपहुंचाए,मेंअपनी यह बातकहतेहुए अपनेलिए औरआपसबकेलिए प्रत्येकप्रकार के पापों से क्षमाप्राप्तकरताहूं,आपभीउससे क्षमाप्राप्तकरें,निसंदेहवहअति क्षमाकरनेवालाबड़ाकृपाकरनेवालाहै।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

ए मोमिनों!ए अल्लाह के बंदो!यहूदियोंकादावाहैकिचूंकिअल्लाह के नबीसोलेमानअलैहिस्सलाम ने मस्जिदेअक़साकानिर्माणकियाथाऔरवेउनही की संतानहैं,इसलिए वहीमस्जिदेअक़सा के सबसेअधिकहकदारहैं,जब्कि यह बातसातकारणों से पूर्णरूप से असत्य हैः

- **प्रथमकारणः**सोलेमानअलैहिस्सलाम ने मस्जिदेअक़सा की स्थापनानहीं कीथा,बल्किउसकापुनर्निर्माणकियाथा,उसकीस्थापनासोलेमान से बहुतपहलेहोचूकीथी,एक कथन के अनुसारआदमहलैहिस्सलाम ने उसकीस्थापना की औरइसकेअतिरिक्तभीअन्य कथनहैं।

द्वितीय कारणःमस्जिदेअक़साकापुनःनिर्माणभीसोलेमान से पूर्वअनेकपैगंबरों ने की,जैसेइब्राहीमऔर याकूब,उनके निर्माणका**उद्देश्य**थाकिइसमें एकेशवरवादी बंदे अल्लाह की प्रार्थनाकरें,न किवे यहूदियोंकापूजास्थल बन जाए।

- **तृतीय कारणः**सोलेमानअलैहिस्सलाम एकेशवरवादीथे,क्ंितु यहूदीअपनेपैगंबरों के मार्गपर न चलसके,बल्किउनसे शत्रूता की,तौरैतऔर इंजील मेंहैरफैरकरदिया,बनीइसरीईल के जमानेमेंही यहूदअपनेकुफर के कारणबनीइसराईल से अलगहोगए,जैसेनूह़ अपनेबेटे से अलगहोगए,इब्राहीमअपनेपिताआज़र से अलगहोगए,औरमोह़म्मदअपनेचचाअबूलहब से अलगअलगहोगए,कुफरमुसलमानोंऔरकाफिरों के बीचमित्रताऔरसंबंध को खतमकरदेताहै,यहीकारणहैकिबनीइसराईलकोजोश्रेष्ठताएंप्राप्तथीं,उनमें से कोईवरिष्ठता यहूदियोंपरसत्य नहींबैठता,उनके कुफर ने उन्हेंइनश्रेष्ठताओं से वंचितकरदियाहै।
- **चौथाकारणः**यदिसोलेमान ने मस्जिदकानिर्माणकियातोइसका यह मतलबनहींकिवहअपनेसंतान एवंजाति के लिए उसकेमालिकहोगए,क्योंकिउन्होंनेमस्जिदकापुनर्निर्माणइसलिए कियाकिलोगउसमेंनमाज़ पढ़ सकें,उन्हेंइससेकोईमतलबनहींथाकिकोंसावंशऔरजातीप्रजाति के लोगउसमेंनमाज़ पढ़े,क्योंकिपैगंबरों की दावतवंशऔरजातीप्रजाति के लिए नहींथीजैसाकि यहूदियों के हैरफैरकिए हुए धर्ममेंहै,बल्किउनकीदावत एकेशवरवादऔर धर्मनिष्ठापरआधारितथी।
- **पांचवाकार**णः उमररजीअल्लाहुअंहु ने जबबैतुलमक़दिसकोविजय कियातो एक अनुबंध पत्र तैयारकियाथाजो उस समय से अबतकबरकरारहैऔरमुसलमान उस परस्थिरहैंऔरआगेभी उस पर जमें रहेंगे,वह यह किफलसतीनमुसलमानों की संपत्तिरहेगाऔरउसपरउनहीकासाशनरहेगा,यहूदियोंकोवहांरहने की अनुमतिहोगी,इसकेअतिरिक्तउनकाफलसतीनपरकोईअधिकारनहींहोगा,तथाउनसेमुसल मानों के साशन एवंप्रशासन से लाभार्थीहोने के बदलेजिज्या(कर)वसूलाजाएगा।

छटाकारणः अल्लाहतआ़ाला ने अपनीपुस्तकमें यह निर्णय ○ करदियाहैकिसमस्तभूमीउसकीहै,वहअपनेनेकबंदोंकोउसकावारिसबनाताहैः

(وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ)

अर्थातःहमज़बूरमेंप्रामर्श के बाद यह लिख चूकेहैंकिपृथ्वी की विरासतमेरेनेक बंदे(ही)होंगे।

यह बातभीढकी छुपीनहींहैकिनेकवहीहैजोइस्लाम धर्म के अनुयायीहो,और ○
यहूदीतोसंदेशवाहकों के शत्रु
औरहत्यारेहैं,इब्नेओसेमीनरहीमहुल्लाहकानिष्कर्षहैकि:बनीइसराईलपवित्र भूमि के
स्र्वाधिकपात्र हैं,यह उस समय के लिए थाजबवेमोमिनथे,इसलिए
नहींकिवेबनीइसराईल(की जाती)से हैं,बल्किइसलिए
किवेमोमिनहैं,इसमेंकोईसंदेहनहींकिमूसाअलैहिस्सलाम के
जमानेमेंवेपृथ्वीपरसर्वश्रेष्ठलोगथे,अल्लाहकाकथनहै:

(وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ)

अर्थात: अर्थात:हमज़बूरमेंप्रामर्श के बाद यह लिख चूकेहैंकिपृथ्वी की विरासतमेरेनेक
बंदे(ही)होंगे।

तोजिसप्रकारअल्लाहतआ़ला ने बनीइसराईलकोफिरओ़न के राज्य
औरउसकेसाशनकावारिसबनाया,इसीप्रकारमुसलमानोंऔरमोह़म्मदसल्लल्लाहुअलैहिवसल्लमपर
ईमानलानेवालोंकोबनीइसराईलकाउत्तराधिकारीबनाया।समाप्त[16]

सातवांकारण:समानरूप से समस्तमस्जिदोंऔरविशेषरूप से ○
तीनमस्जिदोंपरमोमिनोंकोसंरक्षणप्राप्तहोगी,न किकाफिरोंको,अल्लाहकाकथनहै:

(مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ*إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ)

अर्थात:बहुदेववादियों के लिए यह योग्य
नहींकिवेमस्जिदोंकोआबादकरें।इससस्थितीमेंकिवेस्वयंआपनेकुफर के आपसाक्षीहैं,उनके
आ़मालनष्टहैं,अल्लाह की मस्जिदों की रौनक व आबादी उनके हिस्सेमेंहैजोअल्लाहपरऔर
क़्यामत के दिनपरईमान रखतेहों,नमाज़ो के पाबंदहों,जकातदेतेहों,अल्लाह के सेवाकिसी से
न डरतेहों।

ए अल्लाह के बंदो!अल्लाहतआ़ला ने ○
सजदाकरनेवालीपेशानियों,एकेशवरवादीदिलों,वज़ूकिए हुए हाथोंऔरसत्य
बोलनेवालीजीभों से सहायता एवंविजय

16(आप रह़िमहुल्लाह का कथन देखें:सूरह माइदा की तफसीर में इस आयत की तफसीर:(يا قوم ادخلوا الأرض المقدسة التي كتب الله لكم)

कावादाकियाहै,अल्लाहतआ़लाअपनेवादेमेंसच्चाहै,वहवादेकाउल्लंघननहींकरता,अल्लाह तआ़लाकाकथनहैः

(وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ)

अर्थातःतुममें से उन लोगों से जोईमानलाए हैंऔरनेककार्यकिए हैंअल्लाहतआ़लावादाफरमाचुकाहैकिउन्हेंअवश्य पृथ्वीपर खलीफाबनाएगाजैसेकि उन लोगोंको खलीफाबनायाथाजोउनसेपूर्वथेऔरनिसंदेह उनके लिए इस धर्मको शक्ती के साथठोसकरकेजमादेगाजिसे उनके लिए वहपसंदफरमाचूकाहैऔर उनके इसडरकोवह शांति से बदलदेगा,वेमेरीपूजाकरेंगे।मेरेसाथकिसीकोभीसाझी न बनाएंगे।उसकेपश्चातभीजोलोगनाशुकरीऔरकुफरकरेंवेनिसंदेहफासिकहैं।

- आप यह भीजानलें-अल्लाहआपपरकृपाकरे-किअल्लाहतआ़ला ने आपको एक बड़ीचीजकाआदेशदियाहै,अल्लाहकाकथनहैः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाहतआ़लाऔरउसकेदेवदूत उस नबीपररह़मतभेजतेहैं,ए ईमानवालो!तुमभी उन परदरूदभेजोऔरअधिकसलामभीभेजतेरहाकरो।

हेअल्लाह! तूअपनेदास एवंसंदेशवाहकमोह़म्मादपररह़मत एवं शांतिभेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयोंऔर क़ेयामततकनेकनीयती के साथउनकाअनुगमनकरनेवालों से प्रसन्नहोजा।

हेअल्लाह! इसलामऔरमुसलमानोंकोसम्मान एवंप्रतिष्ठाप्रदानकर,बहूदेववाद एवंबहूदेववादियोंकोअपमानितकर,तूअपनेऔरइस्लाम धर्म के शत्रुओंकोनष्टकरदे,औरअपने एकेश्वरवादीबंदों की सहायताफरमा।

हेअल्लाहतूहमेंहमारेदेशोंमें शांतिप्रदानकर,हमारेइमामोंऔरहमारेहाकिमोंकोसुधार दे,उन्हेंहिदायतकानिदेशकऔरहिदायतपरचलनेवालाबना।

हेअल्लाह! समस्तमुस्लिम शासकोंकोअपनीपुस्तककोलागूकरने,अपने धर्मकोउच्चकरने की तौफीकप्रदानकरऔरउन्हेंअपनेप्रजाओं के लिए रह़मतकाकारणबना।

- हेअल्लाह!निसंदेह यहूदीसरकशी एवंविदरोहीकररहेहैं,वेपृथ्वीअत्यंतबिगाड़ फैलारहेहैं,हेअल्लाह!उन्होंनेपैगंबरों की भीहत्या की है,देशोंपरकबजाजमायाहै,धनदोलतकोलूट खायाहै,हेअल्लाह!तूउनपर यातना एवंमहामारीभेजदे,हेअल्लाह!उनकेदिलोंमेंडरडालदे,हेअल्लाह!हमतुझसे शिकायतकरतेहैं,तुझपरहीभरोसाकरतेहैं,तेरेबेगैरहमारीकोई शक्तिनहीं,हेअल्लाह!मस्जिदेअक़्साकोसम्मान एवंप्रतिष्ठाप्रदानकर,उसे यहूदियों की गंदगी से पवित्र करदे।
- سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

लेखकः

मजिदबिनसुलेमानअलरसी

९शौवाल**१४४२**ह़िजरी

जूबैल,**सऊदी**अ़रब

००९६६५०५९०६७६१

अनुवादः

फैजुररह़मानह़िफजुररह़मानतैमी